''नागौर जिले की माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं (ग्रामीण एवं शहरी) की कुण्ठा परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन''

जैन विश्वभारती संस्थान, लाड़नूं के
शिक्षा अधिस्नातक (एम. एड़) उपाधि
की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघुशोध – प्रबन्ध

2015-2017

निर्देशक
डा. मनीष भटनागर
(सहायक आचार्य)

शोधकर्त्री
इन्दु कुमारी
एम. एड. (छात्रा)

शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं – 341306 (राजस्थान)

घोषणा पत्र

मैं इन्दु कुमारी शोधकर्त्री जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय लाडनूँ यह घोषणा करती हूँ कि मैनें अपना लघु शोध प्रबंध का कार्य जिसका शीर्षक ''नागौर जिले की माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं (ग्रामीण एवं शहरी) की कुण्ठा परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन'' निर्देशक डॉ. मनीष भटनागर के कुशल एव प्रेरणास्पद मार्गदर्शन में पूर्ण किया। यह कार्य मेरी मौलिक कृति है।

दिनांक –

स्थान –

शोधकर्त्री

इन्दु कुमारी

एम. एड. छात्रा

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि इन्दु कुमारी एम. एड. (छात्रा), सत्र 2015–2017 शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं की शिक्षा अधिस्नात्मक उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु लघु शोध प्रबन्ध ''नागौर जिले की माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं (ग्रामीण एवं शहरी) की कुण्ठा परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन'' मेरे निर्देशन एवं मार्गदर्शन में परिश्रम एवं लग्न से पूरा किया है।

शोध निर्देशक

डॉ. मनीष भटनागर

(सहायक आचार्य, जैन विश्व भारती संस्थान लाडनूँ)

।। जय गणेश।।

आभार प्रसून

"कार्य आपके प्रेरणा दिलाये।
प्रगति का मार्ग प्रशस्त कराये।
पथ–प्रदर्शक आप हमारे
आशीष आपका हमें संवारे।।"

जीवन में हर दिन, हर पल कुछ नया कर दिखाना मूर्त जीवन की निशानी है। इन कार्यो में अनेक बाधाएँ सामने आती है। परन्तु प्रयत्नशील प्राणी उनका सामना करता रहता है। मैनें इस विशाल समुन्द्र को पार करने का साहस तो किया परन्तु यह मां सरस्वती की कृपा और अपने गुरूजनों के आशीर्वाद से ही पूर्ण हो सका है।

मैं सर्वप्रथम अपने पर्यवेक्षक **डॉ. मनीष भटनागर** के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिनके अत्यन्त सहज, प्रेमपूर्ण व्यवहार, प्रोत्साहन व सुझाव से इस लघु शोध प्रबन्ध का कार्य मैनें पूर्ण किया।

मैं संस्थान के विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन का भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मेरा मार्ग प्रशस्त किया।

मैं हमारे विभाग के समस्त व्याख्यातागणों **डॉ भावाग्राही प्रधान, डॉ विष्णु कुमार, डॉ. सरोज राय, डॉ.आभा सिंह, डॉ. अमिता जैन, डॉ.गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. अदीती गौतम, पुस्तकालयध्यक्ष महिमा जैन,** जैन विश्व भारती शिक्षण संस्थान लाडनूँ (नागौर) जिन्होनें समय समय पर मुझे मार्गदर्शन देकर शोध कार्य को पूरा करने में सहयोग दिया।

मैं अपने पिताजी स्व. श्री **पन्नाराम जी**, माताजी **श्रीमती गणपति देवी**, ससुर श्री **जगदीश प्रसाद जी रायल** व सास श्रीमती भागू **देवी** का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके स्नेह एवं सहयोग के बिना यह शोध कार्य पूर्ण नहीं हो सकता था।

मैं अपने पति **श्री हेमराज रायल** का भी हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ जिनके प्रेम, सहयोग व स्नेह से मैं आज इस मुकाम तक पहुँच पायी हूँ। जिन्होनें सदैव मुझे आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी और हर कदम पर मेरा साथ निभाया तथा कुछ करने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

इसके पश्चात् मैं अपने बेटे **रोहित रायल** के प्रति स्नेह प्रकट करती हूँ जिन्होनें अपनी मधुर मुस्कान से हौंसला प्रदान किया साथ ही मैं अपने **भाई राकेश कुमार तथा बहनें परमेश्वरी, सीता, बेबी** का भी आभार प्रकट करती हूँ जिन्होनें समय समय पर मेरे शोध कार्य में सहयोग किया।

अन्त में **श्री भंवरलाल सैनी** (ग्लोबल कम्प्यूटर एकेडमी) के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होनें अल्प समय में इस लघु शोध को कम्प्यूटर के द्वारा पूर्णता प्रदान की।

विनीत

इन्दु कुमारी

(एम.एड छात्रा)

शिक्षा विभाग

विषयानुक्रमणिका

क्र.संख्या	विषय सूची	पृ. स.
1	**प्रथम अध्याय–शोध परिचय**	**1–15**
1.1	प्रस्तावना	
1.2	समस्या का औचित्य	
1.3	समस्या कथन	
1.4	शोध से उभरने वाले प्रश्न	
1.5	तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण	
1.6	शोध के उद्देश्य	
1.7	शोध की परिकल्पनाएँ	
1.8.	शोध विधि	
1.9	चर	
1.10	न्यादर्श	
1.11	परिसीमन	
1.12	उपकरण	
1.13	संख्यिकी	
2	**द्वितीय अध्याय– सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन**	**16–29**
2.1	प्रस्तावना	
2.2	सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषाएं	
2.3	सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण उद्देश्य	
2.4	सम्बन्धित साहित्य के लाभ	
2.5	सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोत	

2.6	शोध अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य	
2.7	संदर्भ साहित्य से निष्कर्ष	
3	**तृतीय अध्याय – शोध विधि, उपकरण एवं न्यादर्श**	**30–58**
3.1	प्रस्तावना	
3.2	अनुसंधान का अर्थ	
3.3	अनुसंधान की परिभाषाएं	
3.4	अनुसंधान की विशेषताएं	
3.5	तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण	
3.6	परिकल्पना	
3.7	परिकल्पना का अर्थ एवं स्वरूप	
3.8	परिकल्पना के उद्देश्य	
3.9	परिकल्पना का महत्व	
3.10	परिकल्पना की विशेषताएं	
3.11	परिकल्पनाओं के प्रकार	
3.12	शोध में प्रयुक्त परिकल्पनाएं	
3.13	न्यादर्श	
3.14	न्यादर्श की परिभाषाएं	
3.15	न्यादर्श के आवश्यक तत्व	
3.16	न्यादर्श के लाभ	
3.17	न्यादर्श की सीमाएं	
3.18	न्यादर्श की विशेषताएं	
3.19	न्यादर्श की विधियां	
3.20	शोध में प्रयुक्त न्यादर्श	

3.21	शोध के चर	
3.22	चर की परिभाषा	
3.23	अध्ययन में प्रयुक्त चर	
3.24	अनुसंधान की विधियां	
3.25	अनुसंधान में प्रयुक्त विधि	
3.26	सर्वेक्षण विधि का अर्थ	
3.27	सर्वेक्षण विधि की परिभाषाएं	
3.28	सर्वेक्षण के उद्देश्य	
3.29	सर्वेक्षण विधि की विशेषताएं	
3.30	सर्वेक्षण विधि के प्रकार	
3.31	सर्वेक्षण विधि के सोपान	
3.32	सर्वेक्षण विधि के लाभ	
3.33	सर्वेक्षण विधि की सीमाएं	
3.34	उपकरण	
3.35	उपकरण के प्रकार	
3.36	शोध में प्रयुक्त उपकरण	
3.37	प्रश्नावली	
3.38	प्रश्नावली की परिभाषाएं	
3.39	प्रश्नावली की विशेषताएं	
3.40	प्रश्नावली के लाभ	
3.41	प्रश्नावली की सीमाएं	
3.42	अंकीकरण	
3.43	प्रविधियां	

3.44	उपकरण का विवरण एवं प्रशासन	
3.45	अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी	
3.46	सांख्यिकी की परिभाषा	
3.47	सांख्यिकी का अर्थ	
3.48	सांख्यिकी की आवश्यकता	
3.49	सांख्यिकी का महत्व	
4	**चतुर्थ अध्याय – तथ्यों का विश्लेषण, वर्गीकरण एवं व्याख्या**	**59–72**
4.1	प्रस्तावना	
4.2	सारणीयन	
4.3	सारणीयन का अर्थ एवं परिभाषा	
4.4	सारणीयन के उद्देश्य	
4.5	सारणीयन की सीमाएं	
4.6	प्रदतों का विश्लेषण एवं व्याख्या	
4.7	सांख्यिकी	
5	**पंचम अध्याय – शोध का सांराश एवं निष्कर्ष**	**73–84**
5.1	प्रस्तावना	
5.2	समस्या कथन	
5.3	शोध के उद्देश्य	
5.4	शोध की परिकल्पनाएं	
5.5	शोध विधि	
5.6	न्यादर्श	
5.7	उपकरण	
5.8	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	

5.9	शोध के परिणाम एवं निष्कर्ष	
5.10	शैक्षिक निहितार्थ	
5.11	भावी शोध हेतु सुझाव	
5.12	उपसंहार	
6	**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**	**85—86**
7	**परिशिष्ट**	